इकाई 27 भारत में मध्य वर्ग

इकाई की रूपरेखा

27.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- मध्य वर्ग की संकल्पना जान सकेंगे,
- भारत में और पश्चिमी देशों के मध्य वर्गों की तुलना कर सकेंगे,
- भारत में मध्य वर्ग के उद्गम का वर्णन कर सकेंगे,
- मध्य वर्ग की राजनीति संबंधी चर्चा कर सकेंगे, और
- स्वतंत्रता के बाद मध्यवर्गों के विकास को समझ सकेंगे।

27.1 प्रस्तावना

हमारे देश में विकास या आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को देखने से पता चलता है कि यह केवल आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं है। यह विकास भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में कुछ मूलभूत परिवर्तन ला रहा है। यह परिवर्तन प्रक्रिया बिल्कुल स्पष्ट है। लोगों के नए सामाजिक समूह तथा नई श्रेणियाँ दिखाई देने लगी हैं। वयस्क मताधिकार पर आधारित शासन की लोकतांत्रिक परंपराओं ने तथा धर्मनिरपेक्ष संविधान ने सामाजिक संगठनों के विभिन्न स्तरों पर चले आ रहे शक्ति संबंधों के परम्परागत ढाँचे में साफ तौर पर परिवर्तन किया है।

भारत में पिछले पाँच दशकों से आर्थिक विकास और लोकतांत्रिक शासन ने भी सामाजिक स्तरीकरण को परिवर्तित किया है। पहले शासन और शासित की व्यवस्था, जो जातिगत

उच्चता और भूस्वामी आधारित थी, एक भिन्न प्रकार की शक्ति संरचना में परिवर्तित हो गई थी। यद्यपि आज भी जाति और भूस्वामी होना विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक महत्वपूर्ण है तो भी आज भारत में वे सामाजिक स्तरीकरण को निश्चित करने वाले एकमात्र घटक नहीं है। पिछले पचास वर्ष के दौरान भारत में शक्ति का नया ढाँचा उभर कर सामने आया है और एक विशिष्ट वर्ग की स्थापना हुई है जो पहले से बिल्कुल भिन्न है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि लोगों की नई सामाजिक श्रेणियाँ तथा नए व्यावसायिक समूह उत्पन्न हुए हैं।

बॉक्स 27.01

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना को जातिप्रथा के ढाँचे में बहुत पहले से देखा जा चुका है। तथापि नयी शहरी अर्थव्यवस्था का विकास और पिछले कुछ वर्षों में कृषि संबंधों में हुए परिवर्तनों के अनुभवों से जाति व्यवस्था समाप्त नहीं हुई तो उसका महत्व कम हुआ है। इसलिए शक्ति संरचना के उद्गम और सामाजिक स्तरीकरण की नयी व्यवस्था को समझने के लिए हमें विभिन्न संकल्पनात्मक श्रेणियों की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में काम करने वाले कुछ सामाजिक विद्वानों का सुझाव है कि हमें 'जाति' की संरचना से 'वर्ग' संरचना की ओर जाना चाहिए। कुछ अन्य विद्वानों का तर्क है कि यद्यपि पुराना जातिक्रम परिवर्तित हो चुका है, फिर भी भारतीय समाज में आज भी विभिन्न स्तरों के विषयों में निर्धारण की भूमिका में लगातार जाति एक महत्वपूर्ण घटक बनी हुई है। फिर भी समकालीन भारतीय समाज को संतुलित रूप से समझने के लिए हमें दोनों संकल्पनाओं भारतीय समाज को संतुलित रूप से समझने के लिए हमें दोनों संकल्पनाओं - वर्ग और जाति का प्रयोग करने की आवश्यकता है। सामाजिक स्तरीकरण की बदलती संरचना के संदर्भ में हमें भारत में मध्य वर्ग के उद्गम को समझना चाहिए।

27.2 वर्ग और मध्य वर्ग की संकल्पना

वर्ग संकल्पना पश्चिमी समाज विज्ञान में बहुत ही महत्वपूर्ण श्रेणी रही है। यह एक लम्बी परम्परा रही है कि पश्चिमी समाज को देखने के लिए वहाँ वर्ग व्यवस्था की संकल्पना को देखा जाता है। समाज विज्ञान के विशिष्ट विचारक कार्ल मार्क्स वेबर ने वर्ग की संकल्पना पर बहुत कुछ लिखा है। मार्क्स ने पश्चिमी समाज के विश्लेषण में तथा अपने सामाजिक परिवर्तन के सिद्धान्त में वर्ग को महत्वपूर्ण श्रेणी माना है।

मार्क्स का वर्ग सिद्धान्त दो खंडों में विभक्त है। वर्ग की संकल्पना के माध्यम से ही उन्होंने स्पष्ट किया है कि शासक अथवा प्रभुत्व वाले अपने से नीचे के लोगों का शोषण करते हैं अर्थात शोषक और शोषित के रूप में स्पष्ट किया है। मार्क्स के अनुसार प्रत्येक वर्ग समाज मूल रूप से दो वर्गों में बँटा होता है। इस द्विखंडीय व्यवस्था की धूरी सम्पत्ति संबंधों से निर्मित होती है– 'अनुत्पादकों' का अल्पसंख्यक वर्ग जो उत्पादों के साधनों पर नियंत्रण रखता है। यह वर्ग शक्तिशाली होने के कारण 'उत्पादकों' के बहुसंख्यक वर्ग से फालतू उत्पादन को छीनने से समर्थ है, जो उनके जीवन यापन का साधन/स्रोत है। इस प्रकार मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार 'वर्ग' उत्पादन संसाधनों के लोगों के समूहों के संबंध है। इसके अलावा मार्क्स के सिद्धांत में आर्थिक अधिकार राजनीतिक अधिकारों से जुड़े हुए हैं। इस लिए उत्पादनों, संसाधनों पर नियंत्रण राजनीतिक नियंत्रण भी प्रदान करता है।

वर्ग संरचना के द्विखंडीय रूप में मध्य वर्ग की स्थिति केवल संक्रमणात्मक होती है। मार्क्स के

लिए मध्य वर्ग में स्व रोज़गार वाले किसान हैं तथा छोटे बूर्जुआ लोग हैं। इन्हें इस लिए ऐसा कहा गया है कि उनके अपने उत्पादन के साधन हैं और वे बिना किसी श्रमिक के स्वयं परिश्रम करते हैं। मार्क्स की भविष्यवाणी थी कि उत्पादन की पूँजीवादी व्यवस्था के विकास से मध्य वर्ग अदृश्य हो जाएगा। केवल दो प्रमुख वर्ग सर्वहारा वर्ग अथवा श्रमिक वर्ग और बुर्जुआ वर्ग या पूँजीवादी वर्ग ही प्रमुख होंगे। वर्ग संबंधों के मार्क्सवादी सिद्धांत में ये दो वर्ग ही महत्वपूर्ण हैं। अन्य वर्ग सिद्धांतवादियों ने मध्य वर्ग को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इनमें प्रमुख हैं – मैक्स वेबर, डाहरेंडोर्फ तथा लोंकवुड।

यद्यपि मैक्स वेबर मार्क्स के वर्ग सिद्धांत को आर्थिक संदर्भ में अत्यंत आवश्यक मानते हैं परन्तु वे संकल्पना के मामले में मार्क्स से बिल्कुल सहमत नहीं है। मार्क्स के विपरीत उन्होंने तर्क दिया है कि बाज़ार अर्थव्यवस्था में ही वर्गों का विकास होता है जिसमें आर्थिक लाभ कमाने के लिए व्यक्तिगत प्रतियोगिता होती है। उन्होंने वर्ग को लोगों के समूहों के रूप में परिभाषित करते हुए कहा है कि जो बाज़ार अर्थव्यवस्था में समान स्थिति में होते हैं और इस प्रकार से वे वास्तव में समान रूप से आर्थिक लाभ कमाते हैं। अत: वेबर की परिभाषा में एक व्यक्ति का वर्ग स्तर उसकी 'बाजार स्थिति' है अथवा दूसरे शब्दों में यूँ कह सकते हैं कि किसी व्यक्ति के वर्ग का स्तर जानने के लिए उसकी क्रय शक्ति का आकलन करना होगा। किसी व्यक्ति के वर्ग का स्तर उसके 'जीवन अवसरों' को भी निर्धारित करता है। उनकी आर्थिक स्थिति अथवा 'वर्ग स्थिति' यह निर्धारित करती हैं कि वे अपने समाज में कितनी वांछनीय वस्तुएँ खरीद सकता है।

बोध प्रश्न 1

1) मार्क्स के वर्ग संरचना के द्विखंडीय सिद्धान्त को लगभग दस पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) मध्य वर्गों को अधिक महत्व देने वाले विचारकों में शामिल हैं:

i).. ii) ....

यद्यपि मार्क्स की तरह ही वेबर ने भी वर्ग को परिभाषित करने के लिए सम्पत्ति स्वामित्व को एक कसौटी माना है। वह मार्क्स के इस विचार से सहमत हैं कि पूँजीवादी समाज में दो मुख्य वर्ग हैं, एक वह वर्ग जिसके पास सम्पत्ति हैं, और दूसरा वह वर्ग जिसके पास कोई सम्पत्ति

नहीं हैं, अर्थात एक सम्पत्तिधारी और दूसरा सम्पत्तिविहीन वर्ग। फिर भी वेबर सभी विहीन लोगों का सर्वहारा वर्ग जैसा एक वर्ग स्वीकार नहीं करता। सम्पत्ति विहीन लोगों की 'वर्ग स्थिति' उनके कौशल के आधार पर अलग-अलग होती है। जिनके पास कौशल होता है, निश्चित रूप से उनका 'बाजार मूल्य' (उदाहरण के लिए डॉक्टर, इंजीनियर तथा अन्य व्यवसायीं) भी अकुशल श्रमिकों की तुलना में अच्छा होगा। इस प्रकार उनकी 'वर्ग स्थिति' उस कामगार श्रेणी के लोगों से भिन्न होगी जो वेबर के सिद्धांत की संरचना में मध्य वर्ग का निर्माण करते हैं। इसके अतिरिक्त, मार्क्स की तरह वेबर समाज के दो भागों में ध्रुवीकरण होने की प्रवृत्ति नहीं मानते। इसके विपरीत वेबर तर्क देते हैं कि पूँजीवाद विकसित होने के साथ सफेदपोश 'मध्य वर्ग' के ह्रास ही अपेक्षा विस्तार रहेगा।

इसके बाद के समाज शास्त्रियों ने अपने मध्य वर्ग की संकल्पना पर अध्ययन में विचारधारा या सिद्धांतों की चर्चा वेबर के विचारों के अनुरूप ही की है।

समाजशास्त्र के ग्रन्थों में 'पुराना' मध्य वर्ग और 'नया' मध्य वर्ग में निर्णायक अन्तर किया गया है। 'पुराना' मध्य वर्ग जैसा कि मार्क्स ने प्रयोग किया है 'लघु बूर्जुआ' यानि वे लोग जो उत्पादन के अपने संसाधनों से कार्य करते हैं जैसे व्यापारी, स्वतंत्र व्यावसायी तथा किसान आदि। इसके साथ ही 'नया' मध्य वर्ग के मायने काफी विस्तृत हैं जैसे कि कुशल श्रमिक या काम करने वाले सफेदपोश वेतनभोगी कर्मचारी तथा स्वरोजगार करने वाले व्यावसायी आदि। यहाँ तक जिनके पास कार्य करने के लिए उत्पादन के साधन नहीं हैं उन्हें भी अकुशल नीलपोश कामगारों से अलग माना गया है। उनकी आय अकुशल नीलपोश लोगों से बहुत अधिक होती है और इनकी जीवनशैली तथा स्तर श्रमिक वर्ग से बहुत श्रेष्ठ होता है।

27.3 पश्चिमी देशों में मध्य वर्ग

ऐतिहासिक रूप से कहा जा सकता है कि 18वीं तथा 19वीं शताब्दी के दौरान पश्चिमी यूरोप में बूर्जुआ वर्ग का वर्णन करने के लिए पहली बार मध्य वर्ग के शब्द का प्रयोग किया गया। औद्योगिक अर्थव्यवस्था के आरंभिक विकास काल के दौरान बूर्जुआ वर्ग (व्यापारियों और उद्योगपतियों का नया वर्ग), एक तरफ कुलीन वर्गों और दूसरी तरफ (भूपतियों और अभिजात वर्ग) गरीब श्रमिक वर्गों के बीच में खड़ा था। जैसे-जैसे औद्योगिक अर्थव्यवस्था का विकास हुआ भूपति वर्ग का ह्रास हो गया। बूर्जुआ वर्ग, जिसमें बड़े उद्योगपति और पूँजीपति थे, शासन वर्ग के रूप में उभर कर सामने आया। मध्य वर्ग शब्द स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले छोटे व्यापारियों, व्यावसायिकों तथा कारीगरों या दस्तकारों के लिए प्रयोग किया जाने लगा जिसके एक ओर बुर्जुआ वर्ग और दूसरी ओर श्रमिक वर्ग था। यह दोनों के बीच में था। नगरों और शहरीकरण के विकास से अनेक नए मध्यवर्गों का विकास हुआ जो औद्योगिक उत्पादन के विकास में शामिल हुए। बड़े-बड़े शहरों और नगरों के विकास के कारण उपभोक्ता और उत्पादकों के बीच सीधा व्यापार होने में कठिनाइयाँ आने लगी थीं। इन सब वर्गों को बाद में 'पुराना मध्य वर्ग' कहा जाने लगा।

'नए मध्य वर्ग' के प्रादुर्भाव ने औद्योगिक पूँजीवाद, बड़े-बड़े निगमों और जटिल संगठनात्मक संस्थाओं के उत्थान को बढ़ावा दिया। प्रसिद्ध समाजशास्त्री जी.डी.एच. कोल ने कहा है कि पश्चिमी अर्थव्यवस्था में दो तरह के महत्वपूर्ण विकासों के कारण 'नये मध्य वर्ग' का उद्‌गम हुआ। पहला कारण था पब्लिक स्कूलों का बड़ी संख्या में खुलना और शिक्षा का व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार। दूसरा यह कि ज्वाइंट स्टाक कम्पनियों का विकास और विस्तार। इन

विकासों के कारण वृहत् उद्यमों का विकास हुआ जिनमें भारी संख्या में उद्यमी और उद्यमों में कार्य करने वाले वेतनभोगी प्रबंधकों तथा प्रशासकों की आवश्यकता के कारण नए वर्ग पैदा हुए। लॉकवुड भी मानते हैं कि निगम पूँजीवाद तथा बड़े संगठनों के उद्गम से नए सफेदपोश पैदा हुए जो वेतनभागी थे।

अभ्यास 1

आंवासीय परिसरों में जाइए और वहाँ पर विभिन्न वर्गों से संबंधित भवनों को पहचानें। विभिन्न तरह के लोगों और उनके कार्यों से संबंधित भवनों के नोट अपनी नोट बुक में लिखें। आप किन भवनों को मध्य वर्ग का कहेंगे और क्यों? अपनी टिप्पणियों की अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों से तुलना करें।

अर्थव्यवस्था की स्थिति में 'पुराना मध्य वर्ग' और 'नया मध्य वर्ग' दोनों में स्पष्ट भेद हैं। पुराने मध्य वर्ग की स्थिति दो ध्रुवी वाली वर्ग संरचना से बाहर की थी। ये वर्ग न तो पूँजीवादी वर्ग का हिस्सा थे और न ही श्रमिक वर्ग का। नये मध्य वर्गों ने इस प्रकार की कोई स्वायत स्थिति प्राप्त नहीं की थी। ये तो बड़े संगठनों का हिस्सा थे। इन की मध्य स्थिति औद्योगिक अर्थव्यवस्था के कारण बनी। इस वर्ग का विकास इसलिए हुआ था क्योंकि आधुनिक उद्योगों में बड़ी संख्या में नए विशेषज्ञों, व्यावसायिकों, तकनीकी और कौशल वाले प्रशासन की भारी माँग थी। अर्थव्यवस्था में तीसरे अथवा सेवा क्षेत्र के विकास के कारण नए मध्य वर्ग का और विस्तार हुआ। शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के साथ अनेक तीसरे उद्योगों जैसे बैंकिंग, बीमा, अस्पताल, होटल, पर्यटन तथा जनसंचार सेवा आदि का विकास हुआ। इन सेवा उद्योगों में कुशल श्रमिकों और व्यावसायिकों की नियुक्तियाँ हुई। इस तरह के वर्ग ने अधिकतर पश्चिमी औद्योगिक देशों में कुल श्रमिक जनसंख्या में अत्याधिक वृद्धि कर दी। इस तरह हमें लगता है कि पश्चिमी देशों के अनुभवों ने मार्क्स को गलत सिद्ध कर दिया। फिर भी 'पुराने मध्य वर्ग' का ह्रास तथा 'नये मध्य वर्ग' का विस्तार हुआ है।

27.4 भारत में मध्य वर्ग

ऊपर हमने देखा कि औद्योगिक और शहरी अर्थव्यवस्था के विकास के साथ पश्चिमी यूरोप में पहली बार मध्य वर्गों का उद्गम हुआ। हम यह भी अध्ययन कर चुके हैं कि नये बूर्जुआ वर्ग/औद्योगिक वर्ग को परिभाषित करने के लिए पहली बार मध्य वर्ग शब्द का प्रयोग किया गया था। और इसके बाद एक ओर औद्योगिक बूर्जुआ तथा दूसरी ओर श्रमिक वर्ग अर्थात कुशल व्यावसायिकों के बीच पैदा हुए सामाजिक समूहों की स्थिति के लिए इस शब्द का प्रयोग किया जाने लगा।

ऐतिहासिक रूप से कहा जाए तो भारत में जो मध्य वर्ग का विकास हुआ है वह पश्चिमी देशों से बिल्कुल भिन्न है। भारत में 19वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटिश शासन के संरक्षण में इस मध्य वर्ग का उदय हुआ। यद्यपि इस वर्ग का जन्म अंग्रेज़ों के संरक्षण में हुआ तो भी इस वर्ग ने अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी मध्य वर्गों ने आर्थिक विकास की नीतियों को निर्णायक स्वरूप प्रदान करने और भारतीय राज्य द्वारा किए जाने वाले सामाजिक परिवर्तनों में सहायता प्रदान की। इसलिए मध्य वर्ग को समझने उसके इतिहास, उसकी सामाजिक संरचना और उसकी राजनीति के विषय में जानना अत्यंत आवश्यक है।

27.5 ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में मध्य वर्ग का उद्गम

भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन इस महाद्वीप में विद्यमान पहले की राजनीतिक व्यवस्था तथा साम्राज्यों से मूल रूप में भिन्न था। ब्रिटिश शासकों ने इस उपमहाद्वीप के अधिकांश भाग पर न केवल अपना राज्य/शासन ही स्थापित किया, बल्कि इस क्षेत्र की उन्होंने आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्थाओं को ही बदल दियां। उन्होंने भू-राजस्व व्यवस्था को बदलने के अलावा इस क्षेत्र में आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था को भी स्थापित किया। उन्होंने राजनीतिक और प्रशासनिक ढाँचे को मान्यता प्रदान की तथा भारतीय लोगों ने पश्चिमी विचारों और सांस्कृतिक मूल्यों को भी लागू किया। भारतीय मध्य वर्ग के जाने माने इतिहासकार बी.वी. मिश्रा ने संकेत दिया है कि इस वर्ग की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पश्चिम में इस वर्ग की उत्पत्ति में और भारतीय मध्य वर्ग की उत्पत्ति में विशेष अन्तर रहा है। पश्चिम में मध्य वर्ग की उत्पत्ति आर्थिक और प्रौद्योगिकी परिवर्तनों के कारण हुई और वहाँ का मध्य वर्ग अधिकांश व्यापार और उद्योग में लगा हुआ है। भारत में इसके विपरीत स्थिति रही है। यहाँ पर कानूनी और सार्वजनिक प्रशासनिक व्यवस्था में परिवर्तनों के परिणामस्वरूप मध्य वर्ग का जन्म हुआ है। इसलिए यहाँ का मध्य वर्ग मुख्य रूप से बौद्धिक व्यवसायों से संबंधित है।' (मिश्रा, 1961 : वी)

19वीं शताब्दी के मध्य तक औपनिवेशिक शासन ने अधिकतर भारतीय राज्यों को अपने शासन में ले लिया था। लगभग इसी समय औद्योगिक क्रांति भी सफल हो चुकी थी। ब्रिटेन की फैक्टरियों एवं मिलों में उत्पादित माल भारत में अत्यधिक मात्रा में आने लगा था तथा ब्रिटेन और भारत के बीच व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हो चुकी थी। इसलिए उन्होंने यहाँ पर रेलवे और अन्य आधुनिक सेवा क्षेत्रों - जैसे प्रेस (मुद्रण और जनसंचार) तथा डाक विभागों की भी स्थापना की। इन संस्थानों को चलाने के लिए शिक्षित लोगों की आवश्यकता थी। सभी कर्मचारीगण ब्रिटेन से लाना संभव नहीं था। इसलिए सेवा क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत के विभिन्न क्षेत्रों में स्कूलों और कालेजों की स्थापना की गई जिससे आवश्यक शिक्षित कर्मचारी वर्ग सुलभ हो जाए। शुरू-शुरू में ये स्कूल कालेज भारत के बड़े शहरों जैसे कि कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में ही खोले गए।

बोध प्रश्न 2

1) भारत के मध्य वर्ग पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। अपना उत्तर पाँच पक्तियों में दें।

....

....

....

....

....

2) भारत में स्वतंत्रता के बाद मध्य वर्ग के उदय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। अपना उत्तर पाँच पंक्तियों में दीजिए।

....

....

....

....

....

जिन लोगों ने अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित धर्मनिरपेक्ष नई शिक्षण संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त की उनके माध्यम से भारतीय समाज में ब्रिटिश योजनाओं के तहत पश्चिमी विचारों और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रसारित किया गया। इन संस्थाओं में जिन लोगों ने भी शिक्षा प्राप्त की वे केवल उनके लिए काम ही नहीं करते थे बल्कि वे अंग्रेज़ों की तरह ही सोचते भी थे। देशी मध्य वर्ग पैदा करने की मंशा यह थी कि वे पश्चिमी संस्कृति के भारत में वाहक बनेंगे। इस अवधारणा को 1935 में लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया था। भारतीय शिक्षा पर टिप्पणी करते हुए मैकाले ने कहा था : 'हम इस समय अपने अथक प्रयासों से एक नए वर्ग का निर्माण करेंगे जो हमारे और जिन लाखों लोगों पर हम शासन करते हैं उनके बीच अर्थ प्रतिपादित करेंगे। ये रंग और रक्त में तो भारतीय होंगे परंतु स्वभाव, विचारों, चरित्र तथा विद्वता में अंग्रेज़ होंगे। (जैसा कि वर्मा, की 1998 : 2 में)

कुछ वर्षों के बाद भारत में एक नया वर्ग पैदा हो गया। जो लोग सरकार की प्रशासनिक सेवाओं में लगे हुए थे वे वकील, डॉक्टर, अध्यापक और पत्रकार आदि स्वतंत्र व्यवसाय करने वाले वर्ग में शामिल हो गए। शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'शिक्षित मध्य वर्ग' की संख्या और आकार में असीमित वृद्धि हुई। यह वर्ग प्रमुख रूप से शहरी क्षेत्रों में केंद्रित थे और सभी लोग ऊँची जातियों की पृष्ठभूमि से आए थे। 1911 तक भारत के विभिन्न भागों में 186 कॉलेज थे और उनमें 36284 विद्यार्थी अध्ययन करते थे। सन् 1921 तक क्रमश: कॉलेजों की संख्या 231 और विद्यार्थियों की संख्या 59595 तक पहुँच गई थी। इसके बाद 1939 तक कॉलेजों की संख्या बढ़कर 385 हो गई तथा विद्यार्थियों की 144904 विद्यार्थियों तक पहुँच गई। (मिश्रा, 1961 : 304)

बॉक्स 27.02

अभी भी कुछ परिवार अपने बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजते थे। शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे लोग डिग्री के साथ-साथ 'उदारवाद' और 'लोकतंत्र' को भी यहाँ लाए। ये विचार फ्रांसीसी क्रांति के बाद पश्चिम में प्रसिद्ध हो चुके थे। अत: वे लोग केवल ब्रिटिश सांस्कृतिक मूल्यों के ही वाहक नहीं थे अपितु स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र के आधुनिक विचारों के भी वाहक हो चुके थे। उनमें से अनेक लोगों ने भारतीय संस्कृति की समीक्षा की ओर 'पुरानी' तथा 'घिसीपिटी' सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्थाओं व्यवहारों को सुधारने की प्रक्रिया आरम्भ की। 19वीं शताब्दी के दौरान भारत के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक सुधार आंदोलन आरम्भ हुआ। जिसका नेतृत्व ये नव शिक्षित मध्य वर्ग के व्यक्ति करते थे।

अंग्रेज़ी से शिक्षित वर्ग के अलावा भी भारतीय समाज के अन्य वर्गों को भी मध्य वर्ग के नाम से जाना जाता था। इनमें छोटे व्यापारी/दुकानदार तथा स्वतंत्र कारीगर थे जिन्हें पश्चिमी संदर्भ के अनुसार 'पुराना मध्य वर्ग' माना जाता था। भारत में व्यापारियों और कारीगरों को हमेशा सामाजिक स्तरीकरण के परम्परागत संरचना में अलग सामाजिक स्तर वाला माना जाता रहा है। इन व्यापारियों और कारीगरों की जातियों को आसानी से पहचान सकते हैं जो ग्रामीण समुदायों के विशेष अंग रहे थे। औपनिवेशिक शासकों की नई प्रशासनिक नीतियों के परिणामस्वरूप अर्थव्यवसथा में परिवर्तन आया तथा अनेक व्यापारी नगरों और शहरों में जा बसे और स्वतंत्र व्यापारी बन गए। यह प्रक्रिया स्वतंत्रता के बाद और भी तेज़ हो गई।

अपने सीमित महत्व में ही सही औपनिवेशिक शासन के दौरान आधुनिक मशीनों के आधार पर उद्योगों का विकास आरंभ हो गया था। 19वीं शताब्दी के मध्य में भारत में रेलवे की स्थापना के साथ ही भारत में आधुनिक उद्योग के विकास के लिए वातावरण और स्थितियाँ बन गई। वैसे मूलरूप से अंग्रेज़ों ने रेलवे की स्थापना ब्रिटेन में कच्चा माल भेजने के लिए की थी। तथापि एक बार रेलवे की स्थापना हो जाने से अंग्रेज़ों ने स्थानीय उद्योग जैसे कि बागानों में भी निवेश किया। आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होने से व्यापार और वाणिज्य में तीव्र गति आई और कुछ स्थानीय व्यापारियों ने अपनी बचत से आधुनिक उद्योगों को विकसित करने में तीव्रता आई। इन उद्योगों में श्रमिक बलों को तो खपाया गया ही साथ में सफेदपोश कुशल कर्मचारियों की भी नियुक्तियाँ की गई। अत: हम कह सकते हैं कि भारत में औपनिवेशिक शासकों द्वारा जो लोग प्रशासनिक ढाँचे में नियुक्त किए गए थे उनके साथ ही औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत सफेदपोश लोग भारत में बन रहे नए मध्य वर्ग का हिस्सा बन गए।

27.6 स्वतंत्रता आन्दोलन के मध्य वर्गों की राजनीति

भारत में यद्यपि मध्य वर्ग अंग्रेज़ी शासन के संरक्षण में पैदा हुआ था और वे सब अंग्रज़ी भाषा और अंग्रेज़ी संस्कृति के शिक्षित लोग थे। परन्तु वे अपने मालिक अंग्रेज़ों के प्रति हमेशा के लिए निष्ठावान नहीं रहे। मध्य वर्ग के सदस्यों ने न केवल सामाजिक सुधार आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया बल्कि उन्होंने राजनीतिक सवाल उठाने आरम्भ कर दिए थे। इसके बाद तो वे भारत में ब्रिटिश शासन की वैधता पर ही प्रश्नचिह्न लगाने लगे थे। ये मध्य वर्ग के ही लोग थे जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया। वर्मा वर्णन करते हैं कि 'शिक्षित मध्य वर्ग ने जो कुलीन वर्ग भी था राष्ट्रीय आन्दोलन को नेतृत्व उपलब्ध कराया और अतयंत उन्नत बूर्जुआ लोकतंत्र के नाम पर स्वयं ब्रिटेन द्वारा किए जाने वाले शासन का विरोध किया।' (वर्मा, 1998 : 21)।

अभ्यास 2

अपने इलाके में कुछ स्वतंत्रता सेनानियों से मिलें। क्या वे महसूस करते हैं कि मध्य वर्ग को पैदा करने वाले अंग्रेज़ थे? यदि ऐसा है तो क्यों? अपने अध्ययन केंद्र के अन्य विद्यार्थियों से अपनी टिप्पणियों की तुलना करें।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपने प्रारंभिक वर्षों में मध्यवर्गीय पेशेवर लोगों द्वारा संचालित की जा रही थी। यहाँ तक कि महात्मा गांधी भी जिनके बारे में माना जाता है कि उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को जन आन्दोलन में बदल दिया, एक वकील थे और विशिष्ट व्यावसायिक मध्य वर्ग से संबंधित थे। यद्यपि गांधीजी किसानों तथा भारतीय समाज के अन्य वर्गों को राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल करने में सफल रहे और कांग्रेस का नेतृत्व हमेशा मध्य वर्ग और विशेषकर उच्च जातियों के हाथों में ही रहा, अंग्रेज़ों को भी कांग्रेस में निम्न वर्ग की भीड़ की अपेक्षा अंग्रेज़ी जानने वाले शहरी मध्य वर्ग के भागीदारों से बात करने में अधिक सुविधा थी। (वर्मा, 1998 : 13)

27.6.1 स्वतंत्रता के बाद भारत में मध्य वर्ग

यद्यपि भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों ने अंग्रेज़ी शासकों से स्वतंत्रता के लिए स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया था। तो भी यह मध्य वर्ग के ही लोग थे जिन्होंने औपनिवेशिक

शासकों से शासन की बागडोर संभाली। यह तर्क दिया गया कि औपनिवेशिक शासन का अन्त होने के बाद भी इसका अर्थ यह नहीं लगना चाहिए कि हमारा पूर्व से बिल्कुल संबंध-विच्छेद हो गया है। अधिकतर संवैधानिक संरचनाएँ जो औपनिवेशिक शासन के दौरान विकसित हुई थी आज भी नए शासन में उन्हीं सिद्धान्तों पर सतत संचालित हो रही है। अत: मध्य वर्ग के जो सदस्य औपनिवेशिक शासकों के लिए काम करते थे उन्होंने राज्य संस्थाओं में अपनी स्थिति के संदर्भ में कुछ अधिक नुकसान नहीं उठाया है।

27.6.2 आकार और संयोजन

स्वतंत्रता के आरंभिक वर्षों के दौरान इस वर्ग के सही आँकड़े उपलब्ध नहीं है। एक अनुमान के अनुसार कुल जनसंख्या का दस प्रतिशत लोग मध्य वर्ग के थे। (वर्मा 1998 : 26) तथा दूसरे समाजों में मध्य वर्गों की तरह यह भी कोई भिन्न नहीं था। इसकी सैद्धान्तिक और आकांक्षा संबंधी दोनों विशेषताएँ एक जैसी थी, परन्तु इसके व्यापक ढाँचे को परिभाषित करने पर आय, व्यवसाय और शिक्षा के संदर्भ में अनेक भिन्नताएँ थीं। मध्य वर्ग के अतिरिक्त नीचे के तबकों में गरीब कृषक, किसान तथा भूमिहीन लोगों की व्यापक संख्या थी। मध्य वर्ग के बाहर के क्षेत्र में अकुशल तथा अर्ध या अल्प कुशल श्रमिक, कुशल श्रमिक, छोटे क्लर्क तथा कर्मचारी जैसे कि पोस्टमैन, कांस्टेबल, सैनिक, चपरासी आदि भी शामिल थे। इस पैमाने के दूसरे सिरे पर भारतीय समाज का उच्च वर्ग, जैसे कि धनी उद्योगपति और पूँजीपति, बड़े जमींदार और राजपरिवारों के सदस्य इत्यादि आते थे। इसके बीच विशिष्ट क्षेत्रों के मध्य वर्ग में से सरकारी सेवा के अधिकारी, योग्य व्यावसायिक जैसे कि डॉक्टर इंजीनियर, कॉलेज और विश्वविद्यालय के अध्यापक, पत्रकार तथा निजी क्षेत्र में लगे हुए सफेदपोश वेतनभोगी कर्मचारी शामिल थे। आय के संदर्भ में मध्य वर्ग सामान्यत: मध्यम आय समूह में शामिल है। परंतु केवल इस प्रकार आय की परिभाषित करने की एकमात्र कसौटी नहीं है। उदाहरण के लिए एक छोटा अशिक्षित व्यापारी मध्य वर्ग का सदस्य नहीं हो सकता। अत: आय की अपेक्षा शिक्षा भारत के सभी क्षेत्रों में मध्य वर्ग की सामान्य विशिषताओं में आती है। यह मध्य वर्ग, स्वतंत्रता के बाद आरंभिक वर्षों में कुछ विचारधाराओं जैसे विकास के लिए और राष्ट्रनिर्माण के लिए प्रतिबद्धता के कारण संगठित था। अंग्रेजी का ज्ञान होना भी इस वर्ग की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी।

मध्यवर्गीय लोग प्राय: आधुनिक आवासों और घनी बस्तियों में रहते हैं।

साभार: बी. किरण मई

27.7 स्वतंत्रता के बाद मध्य वर्गों का विकास

औपनिवेशिक शासन से भारत के स्वतंत्रता इतिहास में एक नए युग का आरम्भ माना जाता है। भारतीय स्वतंत्र राज्य सिद्धान्ततः धर्म-निरपेक्ष लोकतांत्रिक परंपराओं, सभी नागरिकों के लिए सामानरूप से जाति, पंथ या धर्म के बिना किसी भेदभाव के तथा सभी स्तरों - सामाजिक आर्थिक तथा राजनीतिक स्तर पर स्वतंत्रता, न्याय और समानता के लिए प्रतिबद्ध था। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भारत ने नियोजित विकास का मार्ग अपनाया। इसलिए कृषि, औद्योगिक एवं अर्थव्यवस्था के तृतीय क्षेत्रों में विकास के लिए योजनाओं की रूपरेखा तैयार की गई। सभी क्षेत्रों में आर्थिक विकास को तेज़ व उन्नत करने के लिए व्यापक प्रयास किए गए। भारत सरकार ने अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अनेक कार्यक्रमों और योजनाओं का निर्माण किया। इन कार्यक्रमों को निष्पादित करने और उन्हें लागू करने के लिए बड़ी संख्या में प्रशिक्षित कार्मिकों की आवश्यकता थी।

बॉक्स 27.03

प्रशिक्षित एवं कुशल कार्मिकों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए देश के विभिन्न भागों में बहुत सारी संस्थाएँ, इंजीनियरिंग तथा मेडिकल कॉलेज, तकनीकी एवं प्रबंध संस्थाएँ और विश्वविद्यालय स्थापित किए। एक ओर इन संस्थाओं के खुलने से प्रशिक्षित कार्मिकों की बढ़ती हुई माँग को पूरा किया गया वहीं दूसरी ओर नए गतिशील समूहों को आगे बढ़ने के लिए शिक्षा तथा सामाजिक गतिशीलता की इच्छा की पूर्ति के लिए अवसरों को भी उपलब्ध कराया गया।

सरकारी क्षेत्रों में नियुक्त कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि के अतिरिक्त शहरी उद्योग तथा तृतीय क्षेत्रों में भी व्यापक विस्तार हुआ। यद्यपि भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति तीसरी दुनिया के अन्य देशों की तुलना में बहुत ही मन्द रही है परन्तु समग्रतः औद्योगिक क्षेत्रों ने व्यापक रूप से विभिन्न स्तरों पर उन्नति हुई। तृतीय क्षेत्र में संवृद्धि तीव्र गति से हुई है। जनसंख्या विशेषतः शहरी जनसंख्या में वृद्धि से सेवा उद्योग का काफी विकास हुआ है। प्रशिक्षित कार्मिकों के बड़ी संख्या में रोज़गार उपलब्ध कराते हुए बैंकों, इंश्योरेंस कम्पनियों, अस्पतालाओं, होटलों, प्रेस, विज्ञापन एजेंसियों की स्थापना दर में अभूतपर्व वृद्धि हुई। इसके बाद ग्रामीण क्षेत्रों में विकास हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय राज्य ने विभिन्न प्रकार के विकास कार्यक्रमों को आरंभ किया जिसके कारण महत्वपूर्ण कृषि विकास हुआ जो हरित क्रांति के रूप में हमारे समक्ष आया। हरित क्रांति प्रौद्योगिकी के फलस्वरूप भूमि की उत्पादन शक्ति में विकास हुआ तथा इसने भारतीय भूमि मालिकों को जो गाँवों में रहते थे महत्वपूर्ण रूप से समृद्ध बनाया। आर्थिक विकास से ग्रामीण लोगों में खास परिवर्तन हुआ तथा वे महत्वाकांक्षी बने। समर्थ लोग अपने बच्चों को न केवल अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा दिलाते थे अपितु वे अब उच्च शिक्षा के लिए कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों में भी अपने बच्चों को अध्ययन के लिए भेज रहे थे। वस्तुओं की उपभोग संरचना में भी परिवर्तन आया। इससे पहले जिन वस्तुओं को किसान सरल जीवन शैली अपनाने के कारण अनावश्यक मानता था उनके लिए अब गहरी लालसा रखने लगा और जिस जीवन शैली को अपनाने से बचता और दूर रहता था अब उसको प्राप्त करने के लिए प्रतिस्पर्द्धा करने लगा। (वर्मा, 1998 : 95) भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में एक नया वर्ग पैदा हो गया है जो शहरी व्यवसायों में भी कुछ रुचि रखता था। कृषि परिवर्तन की प्रक्रिया में से विद्यमान मध्य वर्गों में नया विभाजन हो गया। सैद्धांतिक शब्दों में इसे यूँ कहा जा सकता है कि यह मध्य वर्गों का 'नया' हिस्सा परम्परागत मध्य वर्ग से बिल्कुल भिन्न था।

पुराने शहरी मध्य वर्गों से भिन्न यह 'नया' ग्रामीण मध्य वर्ग स्थानीय तथा क्षेत्रीय था। ग्रामीण मध्य वर्ग का सदस्य राष्ट्रीय स्तर की अपेक्षा क्षेत्रीय कार्यकलापों में दिलचस्पी रखता था। यह वर्ग राजनीतिक रूप से क्षेत्रीय स्वायत्तता की गतिविधियों या कार्रवाइयों में सबसे आगे रहता था।

मध्य वर्ग का एक और नया हिस्सा स्वतंत्रता के बाद दलित जातियों के समूहों से उभर कर आया। पहले के अछूत/अनुसूचित जाति के सदस्यों के लिए सरकार की सकरात्मक भेद और आरक्षण नीतियों से कुछ लोग शिक्षा और शहरी कार्यों में नियुक्तियाँ विशेषत: सेवा और सरकारी क्षेत्रों में सेवा पाने लगे। कुछ वर्षों बाद नया दलित मध्य वर्ग भी उभर कर आया।

27.8 सारांश

यद्यपि आधुनिक भारतीय समाज का मध्य वर्ग हमेशा ही सर्वाधिक प्रभावशाली हिस्सा रहा है किंतु वे कभी भी इतना विशिष्ट एवं प्रकट नहीं रहा जितना कि 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था की उदारीकरण प्रक्रिया आरंभ होने के बाद रहा है। नई आर्थिक नीति तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के भूमण्डलीकरण के फलस्वरूप भारतीय मध्य वर्ग का नया उत्कर्ष हुआ।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने भारत में मध्यवर्ग के वास्तविक आकार, इसकी उपभोग पद्धति, भविष्य में विकास गति के बारे में एक बहस छेड़ दी है। दावा किया जाता है कि मध्य वर्ग का आकार भारत की कुल जनसंख्या का 20 प्रतिशत हो गया है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इसे 30 प्रतिशत मानते हैं। यह भी कटु सत्य है कि भारत की अधिकांश जनसंख्या अभी भी गरीबी का जीवन व्यतीत कर रही है और मध्य वर्ग ही हैं जो आज भी भारत में सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन में आधिपत्य रखता है।

27.9 शब्दावली

प्रभुत्व (प्रभावशाली) : शोषण करने तथा विशिष्ट होना। इस वर्ग को स्पष्ट करने के लिए मार्क्स के साहित्य में वर्णन किया गया है जिनके पास उत्पादन के अपने साधन होते हैं।

द्विभाजन : स्तरीकरण साहित्य में मार्क्स के दो वर्गों के रूप प्रयोग किया जाता है।

सम्पत्ति संबंध : ये संबंध जिसमें (विपरीत या अन्य) एक ऐसा वर्ग जिसके उत्पादन के अपने साधन होते हैं तथा दूसरा वह वर्ग जो कामगार के रूप में उनके द्वारा नियुक्त किया गया है।

27.10 कुछ उपयोग पुस्तकें

गिड्नस, ए (1980) *दि क्लास स्ट्रक्चर ऑफ दि एडवांस सोसायटिज़,* लंदन, अनविन हाइमन।

मिश्रा बी.बी. (1961) *दि इंडियन मिडिल क्लास देअर ग्रोथ इन माडर्न टाइम्स;* बम्बई, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

27.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) वर्ग संरचना के लिए जो रूप प्रस्तुत किया गया है वह एक द्विभाजन है। इसका अर्थ उनके विचार से समाज की संरचना में एक शोषक वर्ग और एक शोषित वर्ग है। इसलिए सम्पत्ति संबंध मूलरूप से इसी रूप में निहित है। मार्क्स के अनुसार अपेक्षाकृत अल्प उत्पादक बचाया हुआ फालतू उत्पादन को निकालते हैं। इस प्रकार उन्होंने उत्पादन . साधनों को परिभाषित किया है। इसके अलावा उन्होंने उत्पादनों के साधनों पर नियंत्रण को राजनीतिक नियंत्रण माना है। इस रूप में मध्य वर्ग को केवल संक्रमण की भूमिका में माना गया है जिसमें स्व नियोजित किसान तथा छोटा बूर्जुआ वर्ग शामिल है। ये लोग कभी भी वेतनभोगी श्रमिक नियुक्त नहीं करते जबकि इनके पास अपने उत्पादन के साधन होते हैं। इस संदर्भ में मार्क्स का मानना है कि ये लोग एक समय में अदृश्य हो जाएँगे।

2) i) आर. डाहरेंडोर्फ

   ii) डी. लॉकवुड

बोध प्रश्न 2

1) भारत में मध्य वर्ग मूलरूप से कानून और सार्वजनिक प्रशासन की व्यवस्था में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ। इसके अलावा ये लोग बौद्धिक कार्यों से शैक्षिक संस्थानों तथा औद्योगीकरण से संबंधित भारत में ब्रिटिश शासकों ने भी मध्य वर्ग स्थापित किया।

2) यह मध्य वर्ग ही है जिसने औपनिवेशिक शासकों से शासन संभाला था। इस प्रकार यह पूर्व की निरंतरता थी। ऐसा अनुमान किया जाता है कि मध्य वर्ग की कुल जनसंख्या भारत की कुल जनसंख्या का 10 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त गरीब, अकुशल तथा अमीर उच्च वर्ग भी हैं। स्वतंत्रता के बाद मध्य वर्ग में प्रमुख रूप से सरकारी अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर, विश्वविद्यालयों के अध्यापक शामिल हैं जिनकी पर्याप्त आय थी।